इकाई 2 भाषा में न्यूनतम अधिगम स्तर

संरचना

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 न्यूनतम अधिगम स्तर की परिभाषा

2.4 भाषा में न्यूनतम अधिगम स्तर

2.4.1 अधिगम दक्षताएँ

2.4.2 अधिगम-प्रतिफलों का मूल्यांकन

2.5 विशिष्ट दक्षताओं के विकास के लिए विषय-वस्तु चयन

2.5.1 योजना-रूपरेखा तैयार करना

2.5.2 पाठ्यपुस्तकेतर शैक्षणिक सामग्री का निर्माण करना

2.6 सारांश

2.7 इकाई के अंत में अभ्यास

2.8 अभ्यासान्तर्गत पूछे गये प्रश्नों के उत्तर

2.1 प्रस्तावना

पूर्ववर्ती इकाई में आप पहले ही पढ़ चुके हैं कि भाषा न केवल दैनिक जीवन में सामान्य रूप से किए जाने वाले संप्रेषण में अपितु विद्यालय माध्यम के रूप में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षार्थियों में आधारभूत चार कौशल - सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना का विकास करने में शिक्षक की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। आपने त्रिभाषा-सूत्र के बारे में भी पढ़ा है ताकि शिक्षार्थी को विभिन्न स्तरों पर तीन भाषाओं का प्रयोग करने के योग्य बनाया जा सके जिससे वह अन्य परिस्थितियों में प्रभावी रूप से संप्रेषण कर सके।

इस इकाई में आप न्यूनतम अधिगम स्तर की संकल्पना एवं कक्षा एक से पांच तक में भाषा-अधिगम के लिए परिभाषित दक्षताओं के बारें में पढ़ेंगे। हम दक्षताओं के निरूपण की आवश्यकता एवं भाषा शिक्षण/अधिगम के लिए विषय-वस्तु के चयन के आधारभूत सिद्धांतों के बारे में भी चर्चा करेंगे। इस इकाई में यह बताया गया है कि शिक्षार्थी के कठिनाई एवं परिपक्वता स्तर के अनुसार दक्षता-आधारित विषय-वस्तु को किस प्रकार व्यवस्थित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त इस इकाई में भाषा शिक्षण के लिए विषय-वस्तु सामग्री के विभिन्न रूपों की जानकारी पर भी प्रकाश डाला गया है।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप :

- न्यूनतम अधिगम स्तर की संकल्पना का वर्णन कर सकेंगे;
- बेहतर अधिगम के लिए दक्षताओं के निरूपण के महत्त्व को स्पष्ट कर सकेंगे;
- दक्षता-आधारित शिक्षण-युक्तियाँ अपना सकेंगे;
- न्यूनतम अधिगम स्तर के आधार पर शिक्षार्थियों की संप्राप्ति का मूल्यांकन कर सकेंगे;

- दक्षता विशेष का विकास करने के लिए पाठ्यपुस्तक में से संगत विषय-वस्तु का चयन कर सकेंगे;
- शिक्षार्थी की आवश्यकता के अनुसार आप स्वयं ही पाठ्यपुस्तकेतर शैक्षणिक सामग्री का निर्माण कर सकेंगे।

2.3 न्यूनतम अधिगम स्तर की परिभाषा

मोना और शरत कक्षा I में पढ़ते हैं। आप उन्हें भाषा पढ़ा रहे हैं। वार्षिक परीक्षा में आप भाषा के विषय में मोना को 100 में से 70 तथा शरत को 35 अंक देते हैं। उन दोनों को कक्षा II में प्रोन्नत किया गया। क्या आप यह कह सकते हैं कि आपके दोनों शिक्षार्थी भाषा में पर्याप्त रूप से दक्ष हैं? आप शायद सहज रूप से इसका उत्तर न दे पाएं। हो सकता है कि वार्षिक परीक्षा में आपने लिखित अथवा मौखिक रूप में जो प्रश्न पूछे, उनका उत्तर देना मोना के लिए ज़्यादा आसान रहा हो। इसके अतिरिक्त आप पूरे विश्वास के साथ यह भी नहीं कह सकते कि दोनों के भाषा में दक्षताओं का वांछनीय स्तर प्राप्त कर लिया है, क्योंकि आप उस स्तर को निर्धारित नहीं कर पाए हैं जिसे प्रत्येक शिक्षार्थी को प्राप्त कर लेना चाहिए। एक बार उस स्तर को निर्धारित करने के बाद आप उपर्युक्त प्रश्न का उत्तर सहज ही दे सकते हैं। अत: यह वांछनीय है कि शिक्षक के नाते आप उन अधिगम स्तरों के बारे में जानें, जिन्हें प्राप्त करने की अपेक्षा प्रत्येक शिक्षार्थी से की जाती है। **शिक्षा के विभिन्न चरणों पर सभी बच्चों द्वारा (साम्य) अवश्य प्राप्त किए जाने वाले मानकों (गुणता) के निर्धारण ने न्यूनतम अधिगम स्तरों के निरूपण के लिए प्रेरित किया। साम्य के साथ-साथ गुणता की यह धारणा प्राथमिक स्तर पर न्यूनतम अधिगम स्तरों के निर्धारण के प्रयास को रेखांकित करती है।** इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक बालक की तुलनीय गुणात्मक शिक्षा तक पहुँच होनी चाहिए।

इन न्यूनतम अधिगम स्तरों को कक्षा एक से पाँच के लिए भाषा, गणित एवं पर्यावरण अध्ययन के क्षेत्रों में दक्षताओं के रूप में परिभाषित किया गया है।

शिक्षक के नाते आप यह जानने के इच्छुक होंगे कि वे अधिगम दक्षताएँ कौन-सी है और प्राथमिक स्तर पर प्रत्येक शिक्षार्थी द्वारा किन दक्षताओं को प्राप्त कर लेने की अपेक्षा की जाती है। आपने शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में बहुधा प्रयुक्त शब्द - **अधिगम उद्देश्य, शिक्षण उद्देश्य** एवं **अधिगम-प्रतिफलों** के बारे में सुना होगा। यह ध्यान रखें कि शिक्षार्थी अधिकतर ज्ञान का अर्जन तथा समुचित कौशलों एवं दक्षताओं का विकास प्राथमिक स्तर पर ही करते हैं। अत: शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया इस प्रकार की होनी चाहिए कि वह प्राथमिक विद्यालय के शिक्षार्थियों की माँगों को पूरा करने में पूरी तरह समर्थ हो। अधिगम के उद्देश्यों (जिन्हें शिक्षार्थियों द्वारा सीखना अपेक्षित है) को प्राथमिक स्तर के विभिन्न विषयों में न्यूनतम अधिगम स्तर के आधार पर अपेक्षित दक्षताओं के संदर्भ में निरूपित किया जाना चाहिए। जब एक बार अधिगम के उद्देश्यों का निरूपण हो जाए तब यह आपका कार्य है कि आप शिक्षण के उद्देश्यों (जो शिक्षक पढ़ाएँगे) की एक सूची तैयार करें जो अधिगम के उद्देश्यों के अनुरूप हो। तथापि सत्र के अंत में आपको कुछ ऐसे दिशा-निर्देशों (अपेक्षित अधिगम प्रतिफल) की आवश्यकता हो सकती है जिसके आधार पर आप अपने शिक्षार्थियों के निष्पादन (संप्राप्ति) का अभिनिश्चय या निर्धारण करेंगे।

न्यूनतम अधिगम स्तर शिक्षक को अपेक्षित (i) अधिगम उद्देश्यों (ii) शिक्षण उद्देश्यों एवं (iii) अधिगम प्रतिफलों के बारे में एक सुस्पष्ट धारणा प्रदान करता है। अत: न्यूनतम अधिगम स्तर की सहायता से आप:

i) शिक्षार्थियों में अपेक्षित दक्षताओं के विकास पर बल दे सकेंगे;
ii) शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में उपर्युक्त उपागम एवं विधियाँ अपना सकेंगे; एवं

iii) समुचित विधि/विधियों का चयन करते हुए शिक्षार्थी की निष्पति का प्रभावी रूप से मूल्यांकन कर सकेंगे।

अभ्यास

टिप्पणी: क) नीचे दिए गए रिक्त स्थान में अपना उत्तर लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1. प्राथमिक स्तर पर न्यूनतम अधिगम स्तर का निर्धारण किस प्रकार किया जाता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2. न्यूनतम अधिगम स्तर से कक्षा में शिक्षक का मार्गदर्शन किस प्रकार होता है?

.....

.....

.....

2.4 भाषा में न्यूनतम अधिगम स्तर

भाषा में कौशलों के रूप में परिणत चार आधारभूत क्रियाएँ शामिल होती हैं। कौशलों में रूपांतरित ये क्रियाएँ हैं: सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना। इन कौशलों का विकास भाषा शिक्षण का मूल उद्देश्य है। अत: एक शिक्षक के नाते भाषा शिक्षण में आपका कार्य विभिन्न भाषा कौशलों के विकास में शिक्षार्थियों की सहायता करना है। ये कौशल हैं:

- सुनकर समझना;
- अनौपचारिक एवं औपचारिक दोनों स्थितियों में प्रभावी रूप से बोलना;
- पढ़कर समझना;
- विभिन्न प्रकार की सामग्री को पढ़कर आनंद उठाना;
- साफ़, पठनीय और क्रमबद्ध रूप से लिखना;
- विचारों को सृजनात्मक रूप में लिखकर अभिव्यक्त करना;
- विभिन्न संदर्भों में भाषा का सही प्रयोग करना।

2.4.1 अधिगम दक्षताएँ

उपर्युक्त क्रियाकलापों को फिर दक्षताओं के रूप में विनिर्दिष्ट किया गया है। इन दक्षताओं को कक्षावार, विशेष रूप से कक्षा I से V तक के लिए सूचीबद्ध किया गया है।

दक्षताओं की सूची
(भाषा में न्यूनतम अधिगम स्तर का विवरण)

कक्षाएँ	दक्षताएँ
	क) सुनना
कक्षा-I	i) सरल, परिचत एवं प्रचलित पदों, कविताओं तथा कहानियों को सुनकर समझता है।
	ii) परिचित परिस्थितियों में हुए वार्तालाप एवं संवादों को समझता है।
	iii) परिचित परिस्थितियों में दिए गए मौखिक अनुरोधों एवं सरल आदेशों को समझता है।
कक्षा-II	i) सरल लेकिन अपरिचित कविताओं, गीतों एवं कहानियों को सुनकर समझता है।
	ii) परिचित परिस्थितियों में हुए वार्तालाप एवं संवाद को समझता है।
	iii) परिचित परिस्थितियों में दिए गए मौखिक अनुरोध, आदेश, निर्देश एवं प्रश्नों को समझता है।
कक्षा-III	i) वर्णन, विवरण, शब्द-खेल एवं पहेलियों को सुनकर समझता है।
	ii) अपरिचित परिस्थितियों में हुए वार्तालाप एवं संवाद को समझता है।
	iii) सरल क्रियाओं को करने तथा खेल खेलने के मौखिक निर्देशों को समझता है।
कक्षा-IV	i) परिचित परिस्थितियों में दिए गए सरल भाषणों को सुनकर समझता है।
	ii) अपरिचित परिस्थितियों में हुए वार्तालाप एवं संवाद को समझता है।
	iii) क़िसी क्रिया को संपन्न करने के लिए एक के बाद एक दिए गए मौखिक निर्देशों को समझता है।
कक्षा-V	i) विद्यालय के आयोजनों एवं प्रतियोगिताओं में हुए कविता-पाठ, नाटक एवं वाद-विवाद को सुनकर समझता है।
	ii) अपरिचित परिस्थितियों में हुए वार्तालाप, संवाद एवं विचार-विमर्श को समझता है।
	iii) किसी सामूहिक क्रियाकलाप को संपन्न करने के लिए दिए गए निर्देशों को समझता है।
	ख) बोलना
कक्षा-I	i) सरल वाक्यों को सही-सही दोहराता है।
	ii) सरल पदों, कविताओं एवं गीतों को सामूहिक रूप से हाव-भाव एवं क्रियाओं के साथ सुनाता है।
	iii) हाँ/नहीं उत्तर वाले सरल प्रश्नों के उत्तर देता है।
	iv) सरल प्रश्न पूछता है।

कक्षा-II
i) भाषा की सभी ध्वनियों का उच्चारण करता है।
ii) कविताओं और गीतों को अकेले और सामूहिक रूप से सुनाता है।
iii) सरल प्रश्नों के उत्तर पूरे-पूरे वाक्यों में देता है।
iv) परिचित वस्तुओं के विषय में जानकारी प्राप्त करता है।

कक्षा-III
i) शुद्ध उच्चारण के साथ बोलता है।
ii) सरल, परिचित कहानियों को उचित हाव-भाव एवं अनुतान, बलाघात के साथ सुनाता है।
iii) परिचित वस्तुओं के विषय में वर्णन करता है।
iv) अधिक जटिल प्रश्न पूछता है।

कक्षा-IV
i) बिना रुके स्वाभाविक रूप से बोलता है।
ii) प्रभावशाली ढंग से कविता-पाठ करता है।
iii) अपरिचित वस्तुओं के विषय में वर्णन करता है
iv) कक्षा में होने वाली सहज चर्चा में भाग लेता है।

कक्षा-V
i) प्रवाह के साथ स्वाभाविक रूप से बोलता है।
ii) सरल एवं परिचित विषयों पर बोलता है।
iii) परिस्थितियों एवं घटनाओं का वर्णन करता है।
iv) नाटकों एवं वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में भाग लेता है और औपचारिक घोषणाएँ करता है।

ग) पढ़ना

कक्षा-I
i) वर्णमाला के अक्षरों को अलग से और मिले-जुले रूप में पहचानता है।
ii) श्यामपट्ट पर हस्तलिखित सामग्री छपाई के मोटे अक्षरों वाले फ्लैश-कार्डों आदि को पढ़ लेता है।
iii) सरल परिचित शब्दों का सस्वर वाचन करता है (शब्द तीन वर्णों से अधिक न हों)।

कक्षा-II
i) कम प्रचलित एवं संयुक्त वर्णों को पहचानता है।
ii) मोटे एवं छोटे अक्षरों में छपी विषय-सामग्री को पढ़ लेता है।
iii) पदों, कविताओं, गीतों एवं सरल कहानियों का सस्वर वाचन करता है।

कक्षा-III
i) रास्ते पर चलने के संकेत, विज्ञापन-पटों एवं सूचना-पटों पर सरल सूचनाओं को पढ़ता है।
ii) दूसरे बालकों के हाथ की लिखी हुई सामग्री पढ़ता है।
iii) सरल कहानियों की पुस्तकें तथा अन्य बाल पुस्तकें पढ़ता है।

कक्षा-IV
i) कार्टून, कॉमिक्स और पोस्टर पढ़ता है।

ii) हाथ के लिखे हुए पत्रों को पढ़ता है।

iii) बाल-पत्रिकाएँ पढ़ता है।

कक्षा-V i) सरल आकृतियाँ, चार्ट एवं नक्शे पढ़ता है।

ii) छपी हुई एवं हाथ की लिखी हुई पठन-सामग्री को सहजता से पढ़ता है।

iii) अखबार एवं अन्य छपी हुई पठन-सामग्री पढ़ता है।

घ) लिखना

कक्षा-I i) दिए गए स्वर, व्यंजन-मात्रा एवं संयुक्ताक्षरों को देखकर लिखता है।

ii) स्वर-व्यंजन, मात्रा एवं संयुक्ताक्षरों का श्रुतलेखन करता है।

iii) सरल, परिचित शब्द एवं वाक्य लिखता है।

कक्षा-II i) दिए गए शब्दों एवं वाक्यों को देखकर लिखता है।

ii) परिचित शब्दों का श्रुतलेखन करता है।

iii) निर्देशानुसार सरल वर्णनात्मक वाक्य लिखता है।

कक्षा-III i) अक्षरों एवं शब्दों के सही आकार, क्रम तथा अक्षरों और शब्दों के बीच की दूरी के सही अंतर को समझता है।

ii) अपरिचित शब्दों का श्रुतलेखन करता है।

iii) निर्देशानुसार सरल अनुच्छेद अथवा निबंध लिखता है।

कक्षा-IV i) साफ़-साफ़ और स्पष्ट लिखता है।

ii) सरल विराम-चिह्नों सहित श्रुतलेखन करता है।

iii) निर्देशानुसार अनुच्छेदों और विराम-चिह्नों का प्रयोग करते हुए निबंध लिखता है।

कक्षा-V i) सही प्रारूप एवं सही दूरी के साथ लिखता है।

ii) सभी विराम-चिह्नों का प्रयोग करते हुए श्रुतलेखन करता है।

iii) संक्षिप्त और स्वतंत्र निबंध लेखन करता है जिसमें सरल अनौपचारिक पत्र तथा संवाद भी सम्मिलित हैं।

च) विचारों का बोधन (सुनकर और पढ़कर)

कक्षा-I i) मौखिक रूप से संक्षेप में दी गई सरल सूचना का पुनः स्मरण करता है।

ii) सुनकर 'कौन', 'कब' और 'कहाँ' वाले प्रश्नों के उत्तर देता है।

कक्षा-II i) बोली गई अथवा लिखी हुई संक्षिप्त सामग्री के घटनाक्रम को क्रमिक ढंग से पुनः स्मरण करता है।

ii) सुनकर 'क्या' और 'कैसे' वाले प्रश्नों के उत्तर देता है।

कक्षा-III i) बोली गई अथवा लिखी हुई सामग्री में से प्रमुख विचारों को पकड़ पाता है।

ii) किसी सामग्री को सुनने या पढ़ने के पश्चात् 'क्यों' वाले प्रश्नों के उत्तर देता है।

कक्षा-IV i) मौखिक अथवा लिखित सामग्री में व्यक्त विचारों एवं घटनाओं के बीच सरल कार्य-कारण संबंधों को पहचानता है।

ii) किसी सामग्री को सुनने अथवा पढ़ने के पश्चात् 'क्योंकि', 'चूँकि' का प्रयोग करते हुए प्रश्नों के उत्तर देता है।

कक्षा-V i) मौखिक अथवा लिखित सूचना के आधार पर निष्कर्ष निकालता है।

ii) किसी सामग्री को सुनने अथवा पढ़ने के पश्चात् 'यदि-तो', 'यदि नहीं ... तो' का प्रयोग करते हुए सामग्री से संबंधित प्रश्न पूछता है और उत्तर देता है।

छ) व्यावहारिक व्याकरण

कक्षा-I i) शब्दों की अंतिम ध्वनि के आधार पर उनकी समानता को जानने के प्रति सचेत होता है।

कक्षा-II i) शब्दों की आदि और अंत्य स्थिति तथा उनके उद्गम (उपसर्ग, प्रत्यय और धातु) के आधार पर उनकी समानता जानने के प्रति सचेत होता है।

कक्षा-III i) शब्दार्थ के आधार पर शब्दों के आपसी संबंधों के प्रति सचेत होता है।

कक्षा-IV i) वाक्य-रचना के सामान्य प्रयोग संबंधी नियमों को समझता है।

कक्षा-V i) वाक्य-विन्यास की इकाईयों के सामान्य प्रयोग-संबंधी नियमों को समझता है।

ज) स्व-अधिगम

कक्षा-I i) जहाँ उपलब्ध हो वहाँ चित्रों वाली सरल शब्दसूची का प्रयोग कर सकता है।

कक्षा-II i) जहाँ उपलब्ध हो वहाँ चित्रों वाले सरल विश्वकोश का प्रयोग कर सकता है।

कक्षा-III i) जहाँ उपलब्ध हो वहाँ बच्चों के चित्रमय शब्दकोश का प्रयोग कर सकता है।

कक्षा-IV i) जहाँ उपलब्ध हो वहाँ बाल शब्दकोश का प्रयोग कर सकता है।

कक्षा-V i) जहाँ उपलब्ध हो वहाँ बाल विश्वकोश का प्रयोग कर सकता है।

झ) भाषा-प्रयोग

कक्षा-I i) विनम्रता, आदर आदि व्यक्त करने वाले सरल प्रयोगों को समझता है और उनका प्रयोग करता है।

कक्षा-II i) विनम्रता से बात करता है तथा वार्तालाप करते समय ध्यान से सुनता है।

कक्षा-III i) समूह में अपनी बारी आने पर ही बोलता है।

कक्षा-IV i) औपचारिक एवं अनौपचारिक भाषा के भेद को समझता है।

कक्षा-V i) औपचारिक एवं अनौपचारिक परिस्थितियों के अनुरूप उपर्युक्त भाषा का प्रयोग करता है।

ट) शब्दावली-नियंत्रण

कक्षा-I i) पढ़कर समझने का लगभग 1,500 शब्दों का, शब्दभंडार अर्जित करता है।

कक्षा-II i) पढ़कर समझने का लगभग 2,000 शब्दों का शब्दभंडार अर्जित करता है।

कक्षा-III i) पढ़कर समझने का लगभग 3,000 शब्दों का शब्दभंडार अर्जित करता है।

कक्षा-IV i) पढ़कर समझने का लगभग 4,000 शब्दों का शब्दभंडार अर्जित करता है।

कक्षा-V i) पढ़कर समझने का लगभग 5,000 शब्दों का शब्दभंडार अर्जित करता है।

ये दक्षताएँ कक्षावार सूचीबद्ध की गई हैं। फिर भी, कक्षा I की दक्षताओं को कक्षा II से V तक ले जाया गया है। प्रत्येक कक्षा के अंतर्गत सूचीबद्ध दक्षताएँ उन दक्षताओं के विकास के प्रारंभिक बिंदु हैं। इन्हें प्राथमिक स्तर के अंत तक ले जाया जाएगा। ये दक्षताएँ अंत:संबद्ध एवं अन्योन्याश्रित हैं। अत: इन्हें समाकलित रूप में देखना चाहिए। आप ऊपर दी गई सूची से देख सकते हैं कि जैसे सुनना एवं बोलना अंतर्संबंधित हैं वैसे ही पढ़ना और लिखना तथा सुनना और पढ़ना भी।

मान लीजिए, आप 'सुनना' कौशल का विकास करना चाहते हैं, जैसे - सरल, परिचित एवं प्रचलित शिशु गीतों, कविताओं तथा कहानियों को सुनकर समझने की दक्षता (न्यूनतम अधिगम स्तर के विवरण का क. 1 देखें)। इस दक्षता का विकास करने के लिए आप कहानी-कथन विधि का प्रयोग कर सकते हैं। कहानी सुनाने के बाद, आप शिक्षार्थियों से 'कौन', 'कब' और 'कहाँ' वाले प्रश्न पूछ सकते हैं। इन प्रश्नों का उत्तर मौखिक रूप में देने से बोलना कौशल का भी विकास होता है।

यह ध्यान रखें कि किसी प्रसिद्ध कहानी को सुनाते समय आपने कुछ सरल एवं परिचित शब्दों का प्रयोग किया है। इन शब्दों को सुनने से शिक्षार्थियों से इनके उच्चारण को सीखने की अपेक्षा की जा सकती है। उच्चारण अभ्यास के लिए इन शब्दों को बोलना होगा। इसी प्रकार शब्दों की कहानी वर्तनी का अर्थ है - लेखन का अभ्यास।

अत: आप इस बात से सहमत होंगे कि कक्षा में कहानी सुनाना शिक्षार्थियों में विभिन्न कौशलों के अंतर्गत अनेक दक्षताओं का विकास करने में सहायक है। इसीलिए हममें से अनेक प्राथमिक स्तर पर सामान्यत: इस शिक्षण-अधिगम-युक्ति का प्रयोग करते हैं। इससे शिक्षार्थी इस योग्य हो जाता है कि वह:

- सुनकर समझ सके (सुनना कौशल);
- कहानी पर आधारित सरल प्रश्नों के उत्तर दे सके (बोलना कौशल);
- सरल कहानी का सस्वर वाचन कर सके (पढ़ना कौशल);
- पाठ्यवस्तु में से सरल वाक्यों को देखकर लिख सके (लिखना कौशल);
- बोली गई संक्षिप्त सामग्री में प्रस्तुत कहानी की घटनाओं को क्रमिक रूप में पुन: स्मरण कर सके (बोधन/आनुक्रमिक चिंतन)।

2.4.2 अधिगम-प्रतिफलों का मूल्यांकन

न्यूनतम अधिगम स्तर के माध्यम से हमें प्राथमिक स्तर पर शिक्षार्थी की संप्राप्ति का मूल्यांकन करने के लिए सुस्पष्ट दृष्टि प्राप्त हो जाती है। न्यूनतम अधिगम स्तर न केवल शिक्षण एवं

अधिगम के उद्देश्यों को निरूपित करने में सहायता करते हैं अपितु वे इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षण-युक्तियों का चयन करने में भी सहायक होते हैं।

इतना ही नहीं, जैसा कि आप नीचे दी गई तालिका से देख सकते हैं कि शिक्षणोपरांत ये अधिगम-प्रतिफलों को निर्धारित करने में सहायता भी करते हैं।

कक्षा	विषय	दक्षता	न्यू.अ.स्तर का विवरण	शिक्षण-युक्ति	अधिगम-प्रतिफल
I	भाषा	सुनना	क. III	कथन का मौखिक प्रस्तुतीकरण, जैसे -	i) आदेश/प्रश्न के प्रति शिक्षार्थी की प्रतिक्रिया
				i) खड़े हो जाओ। ii) इन वर्णों को पढ़ो।	ii) शिक्षार्थी का वर्ण संबंधी ज्ञान।

इन अधिगम-प्रतिफलों को किस प्रकार निर्धारित किया जा सकता है? इस प्रश्न का उत्तर अत्यंत सरल है। शिक्षण से पूर्व आपने यह अवश्य निश्चय किया होगा कि आपको क्या पढ़ाना है और कैसे पढ़ाना है। साथ ही यह भी अनुमान लगाया होगा कि शिक्षण के अंत में आपके शिक्षार्थी क्या सीख पाएँगे। शिक्षार्थी के अधिगम के संदर्भ में आपकी अपेक्षाएँ कुछ और नहीं बल्कि अधिगम प्रतिफल ही हैं। शिक्षार्थियों का मूल्यांकन करते समय आप देखेंगे कि सभी शिक्षार्थियों के अधिगम-प्रतिफलों में विविधता होगी। उनमें से अधिसंख्य आपकी अपेक्षाओं को पूरा करते होंगे। अन्य के लिए आपको कुछ अन्य प्रकार की शिक्षण-युक्तियों (उपचारात्मक शिक्षण) का प्रयोग करना होगा। इस प्रकार अधिगम-प्रतिफल एक ओर आपको यह बताते हैं कि शिक्षार्थियों ने क्या और कितना सीखा है और दूसरी ओर यह कि आपको उन शिक्षार्थियों के लिए और क्या करना है, जो वांछित अधिगम अर्जन नहीं कर पाए हैं।

अभ्यास

टिप्पणी : अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

3. जो कथन सत्य हैं उनके लिए 'सत्य' पर तथा जो कथन असत्य हैं उनके लिए 'असत्य' पर सही का (✓) का निशान लगाइए:

   i) प्राथमिक स्तर पर सभी बच्चों को गुणात्मक शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए न्यूनतम अधिगम स्तर का निर्माण किया गया है। (सत्य/असत्य)

   ii) न्यूनतम अधिगम स्तरों में सभी बच्चों को समान शैक्षिक सुविधाएँ उपलब्ध कराए बिना गुणात्मक शिक्षा प्रदान करने का प्रयास किया गया है। (सत्य/असत्य)

   iii) न्यूनतम अधिगम स्तर कुछ और नहीं बल्कि वे अधिगम दक्षताएँ हैं जिन्हें प्राथमिक स्तर पर प्रत्येक शिक्षार्थी द्वारा प्राप्त किया जाना अपेक्षित है। (सत्य/असत्य)

   iv) भाषा, गणित, पर्यावरण-अध्ययन ऐसे तीन विषय हैं जिनके लिए विद्यालयी पाठ्यचर्या में अधिगम दक्षताओं का कुछ विस्तार से विवरण दिया गया है। (सत्य/असत्य)

   v) न्यूनतम अधिगम स्तर से शिक्षार्थियों के अपेक्षित प्रतिफलों के बारे में स्पष्ट बोध नहीं मिलता। (सत्य/असत्य)

vi) न्यूनतम अधिगम स्तर शिक्षार्थियों की संप्राप्ति का मूल्यांकन करने में हमारी सहायता करते हैं। (सत्य/असत्य)

vii) भाषा के पाँच आधारभूत कौशल हैं। (सत्य/असत्य)

viii) न्यूनतम अधिगम स्तर की सूची में भाषा की केवल चार दक्षताओं का उल्लेख है। (सत्य/असत्य)

ix) अधिगम दक्षताएँ अंत:संबद्ध एवं अन्योन्याश्रित है। (सत्य/असत्य)

x) शिक्षार्थियों में सुनना कौशल के विकास से पठन कौशल के विकास में सहायता नहीं मिलती है। (सत्य/असत्य)

xi) कक्षा में कहानी सुनाना विभिन्न कौशलों के अंतर्गत अनेक दक्षताओं का विकास करने में सहायक है। (सत्य/असत्य)

2.5 विशिष्ट दक्षताओं के विकास के लिए विषय-वस्तु चयन

शिक्षार्थियों में दक्षताओं का विकास करने के लिए पाठ्यपुस्तक एक प्रधान उपकरण है। किंतु एक शिक्षक के नाते आपको यह ध्यान में रखना होगा कि किसी विशिष्ट दक्षता का विकास करने में पाठ्यपुस्तक का कौन-सा पाठ/पाठ्य-सामग्री सर्वाधिक उपर्युक्त है। इस संबंध में शिक्षक-अधिगम प्रक्रिया के विभिन्न पक्षों के परिचय के लिए योजना-रूपरेखा उपयोगी सिद्ध होगी।

2.5.1 योजना-रूपरेखा तैयार करना

कक्षा एक के लिए निर्दिष्ट दक्षताओं में से बोलने की दक्षता के विकास के लिए तैयार की गई योजना की निम्नलिखित रूपरेखा को देखें:

कक्षा	विषय	कौशल	दक्षता	अधिगम सामग्री	क्रियाकलाप	मूल्यांकन
I	भाषा	बोलना	सरल प्रश्नों के उत्तर देना देना	कहानी/ घटना संवाद वर्णन	समुचित हाव-भाव के साथ घटना का वर्णन करना अथवा कहानी सुनाना	i) प्रमुख पात्रों, घटनाओं आदि पर प्रत्यास्मरण संबंधी प्रश्न पूछना।
					प्रतिभागितापरक अंत: क्रिया विधि का प्रयोग करते हुए प्रश्न पूछना	ii) शिक्षार्थियों से अपने शब्दों में कहानी सुनाने अथवा घटना का वर्णन करने के लिए कहना।
						iii) शिक्षार्थियों को घटनाओं का क्रमवार वर्णन करने के लिए कहना।

इसी प्रकार, कक्षाओं में शिक्षण करते समय आप उन सभी दक्षताओं के लिए योजना-रूपरेखा तैयार कर सकते हैं जिन्हें भाषा में न्यूनतम अधिगम स्तर के अंतर्गत सूचीबद्ध किया गया है।

2.5.2 पाठ्यपुस्तकेतर शैक्षणिक सामग्री का निर्माण करना

कभी-कभी शिक्षार्थियों के विशिष्ट समूह की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए आपको पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त अपनी निजी शैक्षणिक सामग्री का निर्माण करना पड़ सकता है। इस उद्देश्य के लिए आप निम्नलिखित दिशा-निर्देशों का प्रयोग कर सकते हैं:

i) विषय-वस्तु शिक्षार्थी के परिवेश एवं जीवन की वास्तविक परिस्थितियों से संबद्ध होनी चाहिए। इस दृष्टि से पक्षी, पशु, परिवेश, विद्यालय, पड़ोस, साहसपूर्ण कार्य आदि सार्थक क्षेत्र हो सकते हैं।

ii) यह सामग्री शिक्षार्थी की आवश्यकता एवं रुचि को संतुष्ट करने वाली होनी चाहिए तथा उनकी मानसिक परिपक्वता के समनुरूप होनी चाहिए।

iii) यह किसी आयु-वर्ग विशेष के विभिन्न बौद्धिक स्तरों के शिक्षार्थियों को अभिप्रेरित करने में समर्थ होनी चाहिए।

iv) विषय-वस्तु के लिए पाठ्य-सामग्री (क) सरल से जटिल (ख) ज्ञात से अज्ञात एवं (ग) मूर्त से अमूर्त के सिद्धांतों पर आधारित होनी चाहिए।

v) भाषा अत्यंत सरल होनी चाहिए। कक्षा एक, दो, तीन में जटिल वाक्यों के प्रयोग से बचना चाहिए।

vi) प्राथमिक स्तर पर सामग्री में विभिन्न विधाओं का समावेश किया जाना चाहिए, जैसे - कविता, कहानी, संवाद, एकांकी, वर्णन, विवरण, जीवनी, यात्रा वृत्तांत आदि।

अभ्यास

टिप्पणी: अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

4. निम्नलिखित कथनों को पूरा कीजिए:

   क) कक्षा I - III में जटिल वाक्यों से ..... चाहिए।

   ख) चयनित विषय-वस्तु शिक्षार्थियों की ..... को संतुष्ट करने वाली होनी चाहिए।

   ग) पाठ्यपुस्तक दक्षताओं के विकास का ..... उपकरण है।

   घ) चयनित सामग्री विभिन्न बौद्धिक स्तर के शिक्षार्थियों को ..... करने में समर्थ होनी चाहिए।

2.6 सारांश

इस इकाई में हमने निम्नलिखित बिंदुओं पर चर्चा की है:

- न्यूनतम अधिगम स्तर की संकल्पना,
- भाषा विषय में कक्षा एक से पाँच तक के लिए परिभाषित दक्षताएँ,
- बेहतर प्रभावी अधिगम के लिए दक्षताओं के निरूपण की आवश्यकता,
- भाषा शिक्षण-अधिगम के लिए विषय-वस्तु के चयन के आधारभूत सिद्धांत,
- शिक्षार्थियों के कठिनाई एवं परिपक्वता स्तर के अनुसार दक्षता-आधारित विषय-वस्तु की व्यवस्था, एवं
- भाषा शिक्षण के लिए विषय-वस्तु सामग्री के विभिन्न रूप।

2.7 इकाई के अंत में अभ्यास

1. प्राथमिक स्तर पर न्यूनतम अधिगम स्तर के निर्धारण की क्या आवश्यकता है?
2. भाषा शिक्षण में न्यूनतम अधिगम स्तर किस प्रकार सहायक हैं?
3. हमें शिक्षार्थियों के परिवेश से विषय-वस्तु का चयन क्यों करना चाहिए?

2.8 अभ्यासान्तर्गत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर

1. प्राथमिक स्तर पर न्यूनतम अधिगम स्तरों का निर्धारण साम्या सहित गुणता को रेखांकित करने का प्रयास है।

2. – अधिगम-उद्देश्यों के निर्धारण में
   – शिक्षण-उद्देश्यों की पहचान में
   – अधिगम-प्रतिफलों के मापन में

3. (i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य
   (iv) सत्य (v) असत्य (vi) सत्य
   (vii) असत्य (viii) असत्य (ix) सत्य
   (x) असत्य (xi) सत्य

4. (क) बचना
   (ख) आवश्यकता और रुचि
   (ग) प्रधान
   (घ) अभिप्रेरित

शब्द-संग्रह

तार्किक क्रम - लिखित वाक्यों एवं अनुच्छेदों में समुचित संबंध।

सृजनात्मकता - पूर्वपठित वाक्यों अथवा अनुच्छेदों की पुनः प्रस्तुति की अपेक्षा बालक द्वारा अपनी कल्पना पर आधारित प्रस्तुति।

NOTES